वेद में नारी का स्थान

विश्वभर में वेद ही ऐसा ग्रन्थ है जिसमें नारी का स्वरुप तथा उसके लिये महिमा मण्डित, सम्मानजनक स्थान दिया गया है। यजुर्वेद में ८ वें अध्याय के एक मन्त्र में कहा है कि हे नारी तुम ११ विशेषणों से विशिष्ट हो। तुम इडा (बुध्दि) रन्ता (रमणीय) हो। अघ्न्या हो, हव्या हो, काम्या तथा चन्द्रा (आल्हादमयी) हो, महीं तथा अदिति हो। ज्योति तथा विश्रुति एवं सरस्वती हो। " एतानि ते नामानि" यह ग्यारह नाम हैं या तुम्हारे गुण गौरव की गरिमा बतानेवाले विशेषण हैं। पुनः अथर्ववेद में भी नारी के ३ अनुशासनों का वर्णन मिलता है। साम व ऋग्वेद में भी ३ आदर्श हैं।

अधः पश्यस्व, मोपरि संतरां पादकौ हर ।
मा ते कशप्लकौ दृशन् स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ ॥

(ऋग्वेद - ८-३३-१९)

हे स्त्रि, हे देवी तू नीची दृष्टि रख। पुरूष के समान उपर न देख। गंभीरता से चल तेरी शरीर के अवयवों को आच्छादित रख। तू नारी होने के कारण "स्त्री ब्रह्मा बभूविथ" अर्थात जो स्थान यज्ञ में ब्रह्मा का होता है, वह स्थान ही संसार रुपी यज्ञ में तुम्हारा है। वेद में बुध्दिपूर्वक वाक्यरचना है - "बुध्दिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे" ऐसा वैशेषिक दर्शन में कणाद मुनि ने लिखा है। इसकी व्याख्या में स्त्री के गुणगौरव में यजुर्वेद का ११ वेशेषणों का मन्त्र प्रस्तुत है। यह ११ विशेषण क्यों वेद में कहे गये ? उत्तर में प्रत्यक्ष प्रमाण है। ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय सभी के १० इन्द्रियों से विशिष्ट देह तथा देहव्यापार चलते हैं। परन्तु नारी में विशिष्ट शक्ति सन्तानोत्पत्ति या गर्भधारण शक्ति ११ वि क्षमता और है। इसे एकादशा ११ इन्द्रियों की सामर्थ्य से युक्त बताया गया है। नारी को वेद अघ्न्या बताता है। न हन्तुं योग्या अघ्न्या नारी को ताडन के अधिकारी बतानेवाले ध्यान देवें। स्त्री वर्षभर में १२ मास में ६ मास में ऋतुकाल मासिक धर्म होने से बीमार सी रहती है। आर्युवेद में लिखा है, स्त्री को मासिक धर्म के दिनों में सावधानी बर्तनी चाहिए। दिनमें सोने से, ऑखों में अंजन लगाने से, बहुत हॅसने से, बहुत रोने से, तेल मालिश से, अभक्ष्य भक्षण से, मादक वस्तु खाने से बचना चाहिए क्योंकि इससे आगे होनेवाली संतान को हानि होती है।

"दिवा-स्वापात् स्वप्न-शीलः अन्जनात् अन्धःरोदनात्
विकृतदृष्टिः तैलाभ्यंगात् कुष्टिः आतिहसनात्
श्यावदन्तोष्ठतालुजिव्ह : प्रलापी च ॥

इस प्रकार नारी का कर्तव्य सतर्कतामय है। अतः पुरूष की अपेक्षा वह दयनीय रहती है। सरस्वती तथा विश्रुती भी है। यही, पृथ्वीवत् सहनशील है। गृहस्थ कहलाता है, घर में निवास के कारण। पर घर क्या है ? "न गृहं गृहमस्त्रीणां" गृहिणी गृहमुच्यते" । जो स्त्रीरहित है उसका घर श्मशान बन जाता है। अतः वेद में उसे काम्या बताया है। कमनीया भवतीति काम्या, वैदिक गुणगारिमा को धारण करनेवाली नारियों से गृहस्थाश्रम स्वर्गाश्रम बन जाता है। वर्तमान युग वैज्ञानिक युग कहलाता है। अज्ञान सें ज्ञान बडा है तथा ज्ञान से विज्ञान श्रेष्ठ है। विज्ञानसे व्यवहार श्रेष्ठ है व्यवहार से सत्य श्रेष्ठ है जिससे संसार चल रहा है।

श्रौत सूत्र कहता है :

अज्ञानाज्ज्ञानं ज्ञानाव्दज्ञानं विज्ञानाद् व्यवहारः व्यवहारात् तु सत्यत्वोपततिः

हम उस ब्रह्मा का अपमान, प्रताडन करते हैं, जो हमसे अधिक शक्ति दीप्ति, उन्नति केंद्र है। नारी को पागल, बेवकूफ बताने वाले खुद भुल जाते हैं कि हम क्या हैं ?

पुरूषों के दश इन्द्रियों के होने से दश शक्तियों के अधिष्ठान हैं। नारी में ११ शक्तियों का अधारभूत नारी देह की दृष्टि है। अतः कहावत भी है कि "बुध्दिस्त्रासां चतुर्गुणा" नारी में यह अनुपम विशेषता है कि संवेदन शक्ति पुरूष से ज्यादा रखती है। मनु स्मृति में कहा गया है "तस्मादेवाः सदा पूज्या भूषणाच्छादनादिभिः" विपाशा, मृजालिका, अम्बा इत्यादि ऋषिका भी वेद मंत्रों की विचार करनेवाली थी। एक हिन्दी कविने कहा है

जिसने तीर्थंक हमें दिये, जिसने ध्रुव और प्रल्हाद दिये ।
श्री हनुमानसे वीर दिये । युगधर्मि धुरन्धर वीर शिवा ।
ऋषि दयानन्द से धीर दिये । जिसपर सृष्टी से आज तलक ।
नर बना रहा अधिकारी है । वह धर्म शिला ही अतिकठोर ।
पर भावुक हृदया नारी है ।

जो पर्वत पर मैदानों में, जो खेतों मे खलियानों में, जो विपिनों भव्यभवन में भी, जो जेठ दुपहरी कि लूमें। झर झरती वर्षाधारामें। जो शीत काल की रातों में रह सकी न नर से न्यारी है, वह धर्म शिला, अतिकठोर पर भावुक हृदया नारी है। पुरूषों में नारी विरक्ति भी है, तथा नारी आसक्ति भी है। सन्तानोंत्पत्ति के लिये विवाहित नर नारी सम्बन्ध आवश्यक है। अंजनी देवी ने श्री हनुमान जी को जन्म दिया। रामायण की कथा में जब उनकी शक्ति की आवश्यकता पडी तब वह पूछे गये। यह पूछ सार्थक हुई। शाश्वत हो गई। संस्कृत हनुमन्नाष्टक में कवि कहते हैं

उल्लंघ्य सिन्धो : सलिलं सलीलं, य : शोकवन्हिं जनकात्मजाया :
आदाय तेनैव ददाह लंकाम् ॥ नमामि तं प्रान्जलिरान्जनेयम् ॥

अर्थ यह है कि जिसने समुद्र लांघकर आसानी से सीता के शोक की अग्नि को लेकर लंका को जला दिया मै उस अंजनी सुत

हनुमान को करबध्द प्रणाम करता हूँ। सुनते हैं कि दिल्ली में हनुमानजी की एक ग्रेनाईड पत्थर की मूर्ति लाई गई है। यह मूर्ति मंगलोर में पांच छ्हं वर्षोंसे एक शिल्पकार बना रहे थे। इसे दिल्ली तक पहुँचाने में लाखों रुपयें लग गये हैं। इस समय उस ५४ फीट लम्बी मुर्ति की आँख के तराशने में कारीगर लगे हुये हैं। कुछ काल बाद इसका प्रतिष्ठोत्सव मनाया जायेगा यह देवी अंजनी की शक्ति थी जो उन्होंने नौ महिने में ही चैतन्य स्वरूप श्री हनुमान की मूर्ति पैदा करके संसार को कुछ कर दिखाने को प्रेरित किया था। मनुष्य के अत्याचारों के उत्पीडन से सब सहायता के व्दारों को बन्द करके प्रताडन से दहेज के न मिलने पर जला डालने से वह आतंकित हो उठी है। "अति सर्वत्र वर्जयेत्" स्वभावत: उसकी प्रतिमा को दासी बना कर नर कुचल रहा है।

एक मुंशीजी बदायूं नगर में रहते थे। उनकी एक मात्र कन्या थी जिसे विवाह के दहेज में घर का कुल सामान एक ट्रक में भरवाकर वर कन्या को विदा लिया था। एक सप्ताह बाद मुंशीजी को खबर दी गई की आपकी लड़की का हार्ट फेल हो गया है। तब ससुराल वालों ने सुनाया कि वह लडकी न कुछ खाती थी न पीती थी। चाय तक नहीं पी। कुछ लिखती रहती थी। और कहा की हमलोग तो उर्दू भाषा जानते नहीं है। वह नोटबुक में कुछ लिखती रहती थी जो कि उर्दू में लिखा हुवा है। मुंशीजी उर्दू के अध्यापक रहे थे। मुंशीजीने वो नोटबुक हाथ में ली। जब पढा तो यही लिखा था "सभी कुछ साथ ले आई। न घर में कुछ भी छोडा है। हमारे ममी और पापा बिचारे क्या करेंगे" अब, मुंशीजी फूट-फूटकर रोने लगे फिर शायरी जोड के यही लिखा कि "अरी बेटी वह गलती याद आयी ना मुरादी मैं कफन ही रह गया था बस तुम्हें देने को शादी में" ससुराल वालोने कहा। मुंशीजी आपका सामान जैसा था वैसा रखा हुवा है। वह लेजाईये। फिर मुंशीजी यह कहते उठे कि "न उसका था न मेरा था। तुम्हारा था मिला तुमको। इसे तुम साथ ले जाना। मुझे कुछ भी न कहना है। "नारी अभिशप्त सी जीवन व्यतीत कर रही है। भारत सरकार ने ३५ प्रतिशत स्त्रियों के लिए चुनाव में आरक्षित किये हैं। देखना है नारी जागरण के इस युग में भी वैदिक आर्दशों की नारी बन पायेगी या नहीं। आज तो बम्बई के छविगृहों में नारी निर्वस्त्र होकर पुरूषों से सभी बातों का क्षणिक प्रदर्शन तथा उसके मूल्य लेने में भी लगी हुई है। आज उन्नतिका अर्थ अधोगति के कामों में बदनाम होने से लिया जाता है। राधेश्याम जी का यह कथन याद आ रहा है।

गर यही रही बिगडी हालत, दुर्गति होगी अबलाओं की।
जो जाति शिरोमणि है अबतक, वह जूती होगी पॉवों की।

श्री. रमेशचन्द्र पाठक, बरेली (उत्तरप्रदेश)